तृतीय अध्याय

तृतीय अध्याय

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में वातावरण का अनुशीलन

3.1 देशकाल वातावरण का स्वरूप -

उपन्यास में स्वाभाविकता और सजीवता का आभास देने के लिए देश-काल तथा वातावरण का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। प्रत्येक पात्र और उसका कार्य किसी विशिष्ट देश, समय और वातावरण में होता है। अत: उपन्यास की पूर्णता के लिए इन सबका वर्णन आवश्यक है। देशकाल तथा वातावरण के अंतर्गत आचार-विचार, वातावरण, रीति-रिवाज, रहन-सहन और राजनीतिक तथा सामाजिक आदि परिस्थितियों का वर्णन आता है। सामाजिक उपन्यासों में विभिन्न समस्याओं के चित्रण का अवसर रहता है। इन सब समस्याओं का चित्रण करते हुए भी उपन्यासकार को पात्रों की और घटनाओं के घटित होने की परिस्थिति, काल और वातावरण का चित्रण करना पड़ता है।

3.2 देशकाल वातावरण के गुण -

3.2.1 वर्णनात्मक सूक्ष्मता -

वर्णन की सूक्ष्मता काल और वातावरण के साथ प्रत्येक प्रकार से अनिवार्य रूप में संबंधित होता है क्योंकि यहीं वह तत्त्व है जो पाठक के सामने युग और काल विशेष का सजीव चित्र अंकित कर सकता है।

3.2.2 विश्वसनीय कल्पनात्मकता -

उपन्यासकार कल्पना द्वारा एक नए संसार की सृष्टि करता है। कला पूर्ण सफल तभी हो सकती है, जब वह काल्पनिक होते हुए भी सच्चाई का बोध कराए। संतुलित, मर्यादित और आनुपातिक रूप में कल्पना तत्त्व का समावेश उपन्यास के इस उपकरण का एक आवश्यक गुण होता है।

3.2.3 उपकरणात्मक संतुलन -

देशकाल – वातावरण चित्रण का तीसरा उल्लेखनीय गुण उसका उपकरणात्मक संतुलन है । उपन्यास के मूल आकार को ध्यान में रखते हुए वातावरण और चित्रण का उपकरणात्मक संतुलन होना आवश्यक है ।

3.3 देशकाल – वातावरण के भेद -

देशकाल को प्राय: वातावरण का बाह्य रूप कहा जाता है । देशकाल अथवा वातावरण चित्रण के बाह्य रूपात्मक भेद संक्षेप में निम्नलिखित होते हैं -

3.3.1 सामाजिक वातावरण -

सामाजिक दशा का यथार्थ चित्रण इसके अंतर्गत आता है । जैसे सामाजिक जीवन से संबंध रखनेवाले सभी वर्णन वेश-भूषा, भाषा, रीति-रिवाज, सामाजिक वर्ग, शिक्षा, संस्कृति, सामाजिक व्यापार आदि ।

3.3.2 तिलिस्मी एवं जासूसी वातावरण -

तिलिस्मी उपन्यास नितांत काल्पनिक होते हैं। उनका वातावरण निर्माण बहुत कुछ इसी प्रकार के फारसी के किस्मों के आधार पर किया जाता है । अक्सर इन उपन्यासों के वातावरण में रोमाकिटंक तत्त्वों का अधिक समावेश करने के लिए ऐतिहासिक तत्त्वों का सहारा लेना पड़ता है ।

3.3.3 प्राकृतिक वातावरण -

उपन्यासकार अपनी कथा में नियोजित पात्रों के सु:ख-दु:ख के साथ प्रकृति की समता-विषमता को बड़े नाटकीय ढंग से प्रस्तुत करता है । प्राकृतिक वातावरण के अंतर्गत लेखक प्रकृति के अंतर्गत आनेवाली प्राय: सभी वस्तुओं का चित्रण करता है ।

3.3.4 भौगोलिक वातावरण -

किसी भी उपन्यास की कथा का क्षेत्र अनिवार्य रूप से किसी-न-किसी प्रदेश से संबंधित रहता है । ऐसी स्थिति में यदि उपन्यासकार संक्षिप्त भौगोलिक विवरण उपस्थित करके उसकी यथार्थता में वृद्धि कर देता है, तो वह कथा अधिक विश्वसनीय हो जाती है ।

3.3.5 राजनीतिक वातावरण -

राजनीतिक उपन्यासों का वातावरण मुख्यत: राजनीतिक घटनाओं और राजनीतिक चरित्रों के आधारपर बनता है ।

3.3.6 ऐतिहासिक वातावरण -

ऐतिहासिक उपन्यासों के देशकाल वातावरण में इसके चित्रण की आवश्यकता होती है । कल्पनात्मकता के लिए विशिष्ट स्थान रखता हुआ उपन्यासकार ऐतिहासिक वातावरण की निर्मिती करता है ।

3.4 देशकाल और स्थानीय रंग -

स्थानीय रंग से सामान्यत: 'लोकल कलर' का तात्पर्य समझा जाता है । स्थानीय रंग के कारण उपन्यास की प्रभावात्मकता बढ़ जाती है तथा कृत्रिमता घटकर स्वाभाविकता आ जाती है । स्थानीय रंग ऐतिहासिक, सामाजिक तथा राजनीतिक वातावरण प्रधान उपन्यासों में समान रूप से महत्त्व रखता है । स्थानीय रंग-चित्रण, गाँव, शहर-विशेष, प्रकृति, जाति-विशेष, रीति-रिवाज, पहनाव आदि से संबंधित हो सकता है ।

स्थानीय रंगों का गहरा पूट उस कथानक की काल्पनिकता को भी वास्तविकता के स्तर पर ले आता है । चाहे वह कथानक पूर्णत: काल्पनिक ही क्यों न हो ।

3.5 देशकाल – वातावरण से तात्पर्य -

देशकाल से तात्पर्य है – समाज में वर्णित आचार-विचार, रीति रिवाज, रहन-सहन और परिस्थिति आदि से उपन्यास में स्वाभाविकता और सजीवता का आभास देने के लिए देशकाल तथा वातावरण का ध्यान रखना पड़ता है । प्रत्येक पात्र और उसका कार्य किसी विशिष्ट देश, समय और वातावरण में होता है । अत: उपन्यास की पूर्णता के लिए इन सबका वर्णन आवश्यक है । इसमें देश (Place), काल (Time) और कार्य Action का भी महत्त्व है । इन तीन बातों पर उपन्यास की बुनियाद रची जाती है ।

3.6 'बिस्रामपुर का संत' में वातावरण -

श्रीलाल शुक्ल द्वारा लिखित 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में कहीं नगरीय वातावरण है, तो कहीं कस्बाई वातावरण है । हम इसी कसौटी पर 'बिस्रामपुर का संत' के वातावरण पर प्रकाश डालेंगे ।

'बिस्रामपुर का संत' यह ग्रामीण सामाजिक उपन्यास है, अत: शुक्ल जी ने आँचलिक वातावरण का अच्छा नगमा पेश किया है ।

उपन्यास के शुरूवात में ही कुँवर साहब के दीवानखाने का वातावरण, सुंदरी तथा जयश्री के सपनों में घुलमिल जाना तथा धीरजसिंह और कुँवर साहब के बीच के वार्तालाप का प्रसंग आया है । जयश्री के घर का, बेतवा नदी के किनारे का, रावसाहब के घर का, बिस्रामपुर में स्थित आश्रम का, बालविहार एवं अन्य संस्थाओं का, कुँवर साहब को भरती किया गया अस्पताल का, सुंदरी के मौत के समाचार का, कुँवर साहब हेलिकॉप्टर से आश्रम में रवाना होना, कुँवर साहब का, परिवार का, भूदानी कार्यकर्ताओं के गाँव-गाँव घुमनेवाले जत्थे का, विनोबा भावे के सामने ग्रामदान, भूदान के बारे में कुँवर साहब द्वारा किये गये नाटक का विनय वाटिका का, को-ऑपरेटिव फार्म का, भूदान आंदोलन पर विवेक और ताऊ के बीच बहस का,

कुँवर साहब के अंतर्द्वंद्व का आदि को वातावरण के रूप में लेखक ने उपन्यास की कथावस्तु में ढालकर उपन्यास को प्रभावी बनाने का काम किया है ।

इसके साथ-साथ इस उपन्यास में कुँवर साहब और जयश्री की पहचान का तथा उससे जुड़ी हुई कामवृत्ति का, छात्रावास का, जयश्री और कुँवर साहब के प्रेम संबंध का, रेड्डी और कुँवर साहब के बीच के वार्तालाप का, सुंदरी और सुशीला के भूदान-आंदोलन एवं सामाजिक कार्य के सहयोग का तथा विवेक और सुंदरी के प्रेम संबंध का वातावरण लेखक ने सफलता से चित्रित किया है । विवेक और कुँवर साहब के बीच के वार्तालाप का, आश्रम के कमरे का, बिस्रामपुर के आश्रम में कुँवर साहब द्वारा बनवाए गए कमरों का तथा कुँवर साहब का सुंदरी की ओर आकर्षित होने का वातावरण लेखक ने सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है । जिससे उपन्यास में रोमांटिक स्थल का निर्माण हुआ है ।

इसी तरह, रामलोटन के घर का, दुबे महाराज की हड़पनिती का, किसान आंदोलन का, सुशीला के विद्रोह का, कुँवर साहब की मानसिक कुंठा का तथा कुँवर साहब की आत्महत्या का वातावरण भी लेखक ने काफी सुक्ष्मता से चित्रित किया है जिससे उपन्यास का वातावरण मनोवैज्ञानिक बन बैठा है ।

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में दुबे द्वारा किए जानेवाले भ्रष्टाचार का, किसानों पर किये जानेवाले अन्याय-अत्याचार का, निर्मल द्वारा किए जानेवाले भ्रष्टाचार का, राजनीतिक नेताओं की ढोंगी बाजी का तथा भूदान आंदोलन में जमींने देने की चतुरनीति का आदि के रूप में इस उपन्यास में वातावरण उभर उठा है । इससे गांव जीवन में उभरी विकृतियों को वातावरण बद्ध किया है ।

प्रस्तुत उपन्यास में कुँवर साहब के दीवानखाने का वातावरण पाठकों की स्मृतिपर यथार्थ रूप में एक चित्र अंकित करता है । इस दीवानखाने के फर्निचर का, वहाँ की

शान-शौकत का तथा विलासिता का, दीवानखाने के बाहर की बैठक का, इस बैठक में बैठे हुए मुख्यमंत्री का वातावरण, राजनीतिक नेता से मिलने आये लोगों की स्थिति पर प्रकाश डालता है । कुँवर साहब के कमरे का वातावरण देखिए , "कमरे का फर्श बिना किसी डिजाइन के एक सादे नीले कालीन से ढकाया । एक पलंग, जिस पर सुनहरे काम का कलई पलंगपोश बिछा था । एक पुराने ढंग का हलका सोफा, जिसकी लकड़ी ताजी वार्निश से दमक रही थी । दीवार पर सत्य साईबाबा का एक चित्र-उनके विख्यात बालों की काकुलें अनुपात से कुछ ज्यादा उभरी हुई । दीवार में जुड़ी हुयी लिखने की फोल्डिंग डेस्क, उस पर रखा एक नीला टेलीफोन । "[1]

कुँवर जयंतीप्रसाद सिंह हमेशा कामवासना से अतृप्त रहे हैं अत: वे सपने के माध्यम से भी कामपूर्ति करना बाकी नहीं छोड़ते। लेखक ने कुँवर साहब के इस सपने का सुंदरता से चित्रण किया है जहाँ उन्होंने उन ओठों को चूमना चाहा, पर उस स्पर्श में एक आतंक-भरा पथरीलापन था । शुरू में यह सपना एक निर्वसन देह से गुँथने का सीधा – साधा श्रृंगारिक सपना था । अब वहाँ बीच में पत्थर आ गए थे, वजनी एकांत का आतंक था । उन्हें लगा कि उनकी छाती भी पत्थर होती जा रही है । "[2] इस वातावरण से जयंतिप्रसाद की अतृप्ति एवं कुंठा को दिखाया है ।

राजनीतिक नेताओं को मिलने के लिए किस तरह इंतजार करना पड़ता है अत: राजनीतिक नेताओं के दर्शन मानो दुर्लभ ही हो जाते हैं इसका सुंदर उदाहरण बिस्रामपुर का संत में पेश किया है । "नीचे दिवानखाने में मुख्यमंत्री को बैठे लगभग पाँच मिनट हो चुके थे । बेशक बहुत पहले उन्हें नेताओं से मिलने के लिए कई बार प्रतीक्षा करनी पड़ी थी । पर वह उनकी राजनीतिक यात्रा का शुरूआती दौर था । वे अनुभव अब धुल – पुँच गए थे । तभी उन्हें आज का अनुभव नया – नया सा लग रहा था ।"[3] "पर इस तरह बिताया गया समय प्रतीक्षा करवाने

में नहीं, राष्ट्र सेवा के नाम लिखा जाता था ।"[4] इस तरह लेखक ने राजनीतिक वातावरण का सुंदर वातावरण निर्माण किया है । तथा राज्यपाल के दीवानखाने का एवं उनकी शान शौकत का वातावरण लेखक ने बड़ी सफलता से चित्रित किया है – "तस्वीरों, पर्दों, कालीनों, कलाकृतियों की असामान्य संपन्नता ... कोई दोस्त आपसे उधार ली गयी रकम के सहारे आपको ही किसी पंच सितारा होटल में खाना खिलाने जा रहा है ।"[5]

इन उदाहरणों के आधारपर लेखक ने राजनीतिक लोगों की जिंदगी किस तरह ऐशो-आराम की होती है इसका सुंदर वातावरण बनाकर उपन्यास को प्रभावी बनाया है ।

आचार्य विनोबा भावे भूमिहीनों को भूमि दिलाने हेतु या उनकी मदद करने हेतु गाँव-गाँव घूम रहें थे । कुँवर साहब ने भी कुछ भूमि दान में दे दी लेकिन वह भूमि देने के पीछे केवल उनका स्वार्थ था, उनकी चतुर कुटनीति थी, वे अपना नाम ऊँचा करना चाहते थे, इस वातावरण को लेखक ने सूक्ष्मता से चित्रित किया है – "फिर भी, मेरे पास अपनी कुछ निजी जायदाद है । उसके दो गाँवों को मैं भूदान यज्ञ में अर्पित करता हूँ । यह भूदान नहीं है, उन गाँवों के सभी किसानों की ओर से और खुद मेरी ओर से ग्रामदान है ।"[6] कुँवर साहब का सुंदरी से परिचय हो जाने पर कुँवर साहब सुंदरी पर नजर डालते हैं, इस वातावरण को लेखक ने इतनी सूक्ष्मता से चित्रित किया है कि कुँवर साहब की नजर कितनी सूक्ष्म है यह स्पष्ट किया है – "सुंदरी के चेहरे से उसके पाँवों के सुनहरेपन और सुकुमारता का जो ख्वाब बनता था, महिनों से चला आनेवाला धूल और मिट्टी का संसर्ग उसवे निर्दयता से चकनाचूर कर रहा थास । एडियाँ काली पड़ गयी थी, उनमें झलकती हुई लकीरें बिवाइयों की शुरूआत का पता दे रही थी ।"[7]

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में लेखक ने आश्रम के कमरे का जो चित्रण किया है वह देखकर आँचलिक वातावरण का चित्र आँखों के सामने हू-ब-हू पेश होता है "काली का एक जेनरेटर पहले से खराब था, दूसरा भी दस बजे तक चलते चलते रूक गया । अब कुँवर

जयंतीप्रसाद सिंह को यह रात मामूली गाँववालों की तरह बिजली के बिना ही काटनी पड़ेगी ।''[8] अत: इस उदाहरण से लेखक ने गाँव के वातावरण को बिल्कुल सहजता से चित्रित किया है और कुँवर साहब जैसे पांढरपेशे आदमी को किस तरह रात को कष्ट में काटना होता है यह स्पष्ट किया है । अत: इससे ऐशो-आराम में रहनेवाले लोगों को साधारण वातावरण किस तरह कष्टमय होता है, इससे भी स्पष्ट किया है ।

लेखक शुक्लजी प्रकृति का वातावरण इतनी सुंदरता से चित्रित किया है कि पढ़कर सप्तमी का चाँद नजर में मँडराने लगता है । इसका स्पष्टीकरण लेखक ने कितनी सफलता से किया है देखिए – ''रात के ग्यारह बजनेवाले होंगे । सप्तमी का चाँद अभी कुछ देर में डूबेगा पर इतनी चाँदनी बची थी कि छाँव और खुले में अंतर किया जा सके उनके सामने महल के आगे का विशाल चौक और उसके किनारे-किनारे फैली हुई पेड़ों की कतार थी । उसके बाद खेत और फिर महुए और आम की बागों का घना सिलसिला ।''[9] इस वातावरण को देखकर-लेखक की प्रकृति को परखने की कितनी सूक्ष्म क्षमता है इसका परिचय हमें मिलता है । उसी तरह गाँव के मुहल्ले का वातावरण भी लेखक ने इस तरह चित्रित किया है कि पढ़कर गाँव की गलियाँ सामने आती है । जैसे, ''रात थी, पर सन्नाटा न था । गाँव में कुत्ते बोल रहे थे, बागों की ओर से सियारों की टोलियाँ रह रहकर 'हुआ हुआ' कर रही थीं ।''[10] इससे स्पष्ट होता है कि कस्बाई वातावारण की लेखक ने हू-ब-हू निर्मिति की है ।

सुंदरी ने जाँ आश्रम स्थापित किया था वह बिस्रामपुर गाँव बेतवा नदी के किनारे है, वही सुंदरी ने बाल–विहार की स्थापना की है और उससे जुड़ी विद्यालय की इमारत है लेकिन इस वातावरण को लेखक ने कितनी सुंदरता से पेश किया है देखिए – ''दूर दूर तक छिलरे हुए जंगल में, गाँव की आबादी से कुछ दूर, बेतवा नदी के किनारे सुंदरी का स्थापित किया हुआ

बाल विहार था । उससे जुडी हुयी कुछ और संस्थाएँ थीं । बल विवाह से मिली हुयी विद्यालय की इमारत और उसका विस्तीर्ण मैदान था ।''[11]

यहाँ आश्रम के वातावरण से, वहाँ की स्थिति और गति से लेखक ने सुंदरी की सेवाभावी प्रवृत्ति को वातावरण के माध्यम से उभारा है ।

बिस्रामपुर यह एक गाँव है और गाँव के लोगों की रहन–सहन किस तरह होती है इसका सुंदर नगमा लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में उजागर किया है । गाँव में पंपिंग सेट नहीं है – ''गाँव के सारे लोग घड़ों से पानी लाते थे, गाते हुए – मजाक करते हुए । सिर पर, या बहँगी में । जैसे – जैसे पेड यह सारा जंगल बढ़ा दूर – दूर से लोग इसे देखने को आने लगे । आजभी आते हैं ।''[12] तथा ''एक चौडी पगडंडी वाटिका के अंदर जाती थी । अपनी सर्पिल चाल से लगभग सौ कदम आगे आकर वह झाड झंखाड में खो-सी गयी थी ।''[13] इस तरह का वातावरण बनाकर लेखक ने गाँव के लोगों की रहन-सहन और विनय वाटिका को पाठकों के सामने खड़ा किया है । वातावरण का यह एक सुंदर नमुना बन बैठा है ।

सुंदरी की मौत होने के बाद कुँवर जयंतीप्रसाद सिंह बिस्रामपुर चले जाते हैं और बेलवा नदी के किनारे बैठकर एकाँत में चिंतन करते हैं । अत: कुँवर साहब के मन की दु:खद स्थिति को लेखक ने प्रकृति के साथ डालकर सुंदरता से चित्रित किया है । जिससे पाठक भी कुछ देर उसी वातावरण में स्वयं को ढालकर सोचने के लिए मजबूर हो जाता है। उदाहरणार्थ ''बेतवा के इस किनारे भले ही खड़ी ढलान, भरके और घने जंगल हों, उस पार, जहाँ दूरवर्ती पहाड़ियों के पीछे सूरज डूबनेवाला था, नदी का किनारा बड़ी हलकी उठान से, मोटी ललछौंही बालू के सुरूआती फैलाव को छोड़ता हुआ, दूर दूर तक फैले हुए झाड झंखाड में छिप जाता था । फिर कुछ और ऊँचाई पर रबी की हरी भरी फसल का नियमित विस्तार था । उसके आगे

कोई गाँव रहा होगा जहाँ के झोपड़ों से उठता हुआ झीना धुआँ पीछे की पहाडियों के फासले को और भी लंबा बनाए दे रहा था ।''[14]

अत: लेखक ने कितनी सूक्ष्मता से प्रकृति के वातावरण की निर्मिती की है और उससे अप्रत्यक्ष रूपसे कुँवर साहब के विचारों को जोड दिया है और अपने भाषाप्रभुत्व का परिचय कराया है । यहाँ कुँवर जयंतिप्रसाद सिंह के मानसिक भावों के साथ प्रकृति का तादात्म्य दिखाकर वातावरण को पुष्ठ बनाया है ।

सुंदरी के मौत के बाद आश्रम की व्यवस्था का क्या होगा इस पर बातचीत होने लगती है और कुँवर साहब भी विचारों के घेरों में डूब जाते हैं । अत: उनके विचारों को लेखक ने इस तरह की वातावरण निर्मिर्ति बनाकर प्रस्तुत किया है कि पाठकों की स्मृति पर भी विचारों की तरंगे निर्माण होने लगती है । जैसे, ''सिनेमाघर के पर्दे पर चलते हुए किसी खास दृष्य से बचने के लिए हम वहाँ से निगाह हटाकर चारों ओर देखने लगते हैं और वास्तविकता की जर्मीन छूने के लिए लाल अक्षरों में चमकते हुए 'एक्जिट' की ठोस मौजूदगी में राहत खोजते हैं ।''[15]

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में लेखक शुक्लजी ने कुँवर साहब और उनका बेटा विवेक दोनों के बीच या दो पीढ़ियों के बीच के अंतर को स्पष्ट किया है । कुँवर जयंतीप्रसाद सिंह रियासत के मालिक है और उसी तरह ही वे व्यवहार करते हैं लेकिन विवेक मात्र जीवन की वास्तविकता जानता है और उसी के अनुसार व्यवहार करता है । अत: विवेक एक राज्यपाल का बेटा होकर या एक प्रोफेसर होकर भी साधारण कोठी में रहना ही अधिक पसंद करता है, अत: उसकी कोठी का वातावरण लेखक ने हु-ब-हु प्रस्तुत किया है । जैसे ''बरसात की खुली सुबह में सामनेवाले कमरे के दरवाजे पर मुर्दा पतंगे काली भूरी राख के ढेर की तरह बिखरे हुए थे, बरामदे में जलने वाली बत्ती के साथ इस मौसम की रातों में यह रोज ही होता रहता था ।''[16]

उपर्युक्त विवरण से लेखक ने बाप-बेटे के बीच जो विचारों में अंतर है, रहन-सहन में अंतर है उसे एक सुंदर वातावरण की निर्मिर्ति करके पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है । दो पीढियों के बीच संघर्ष के वातावरण को लेखक ने ऊँचे ढंग से ढालकर युग-बोध, समय-बोध को खड़ा कर दिया है ।

वातावरण व्यक्ति को 'साधु' भी बनाता है और डाकू भी । बालक स्वयं कुछ होकर या कुछ बनकर जन्म नहीं लेता है । समाज का वातावरण ही उसका निर्माण करता है । आरंभ में मानव शिशु की मनोवृत्ति पूर्णतया आत्मकेंद्रित रहती है परंतु ज्यों-ज्यों उसका मानसिक विकास होता है उसी तरह व्यक्ति का भी विकास होता चला जाता है । अत: मानव उन घटनाओं को,क्षेत्रों को श्रेष्ठ मानता है जिससे उसका संबंध होता है ।

प्रस्तुत उपन्यास में कुँवर साहब का सुंदरी से परिचय होने के बाद उसे चाहने लगते हैं, अत: वे अपनी उम्र का खयाल नहीं करते । वे सुंदरी के साथ शादी करना चाहते हैं, उसको भोगना चाहते हैं उसी सुंदरी से विवेक प्रेम करता है और वे दोनों शादी करना सोचते हैं । अत: सुंदरी और विवेक के बीच एक खलनायक की तरह कुँवर साहब आ जाते हैं, जिसके कारण सुंदरी विवेक से शादी करने से इन्कार करती है । इस बात का पता कुँवर साहब को सुशीला ने भेजे हुए सुंदरी के पत्र से चलता है । वे आत्मग्लानि से आहत हो जाते हैं लेकिन विवेक मात्र शादी करने का खयाल ही मन से निकालता है इस वातावरण को लेखक ने इतनी गहराई से चित्रित किया है कि पाठक भी इस पर चिंतीत होते हैं और विवेक पर सोचने लगते हैं । विवेक की हालत को लेखक ने इस तरह चित्रित किया है – ''खिड़की के पास विवेक जीन्स और घिसी हुई कमीज में सफेंछ बालों को ललकारती हुई चुस्ती के साथ खडा था ।''[17] अत: सुंदरी के मौत के बाद विवेक शादी नहीं करता । विवेक की यह हालत देखकर कुँवर साहब भी चिंतीत होते हैं ''कुछ पाने के लिए उन्होंने बहुत कुछ खोया है ।''[18]

इस तरह शुक्ल जी ने दोनों के बीच मौन वातावरण को बिल्कुल सूक्ष्मता से चित्रित किया है ।

लेखक शुक्ल जी ने भूदान आंदोलन की पृष्ठभूमि के आधार पर, घटनाओं और परिस्थितियों के चित्रण द्वारा उपन्यास की निर्मिति की है । घटना-विशेष अथवा परिस्थिति विरोध से आंतरिक वातावरण मूर्त रूप में सामने आता है । विवेक को अपने पिताजी की ढोंगी या नाटकीय वृत्ति का परिचय है अत: दोनों में काफी फासला है । विवेक अपने पिताजी से खुलकर बाते नहीं करता अत: दोनों में मानो एक तनाव जैसा ही वातावरण है । विवेक पिताजी से कहता है – ''आप दिल्ली आईए, कुछ दिन आराम से आराम कीजिए – मेरा मतलब है – सिर्फ आराम कीजिए । इंस्टीट्यूट औफ इकॉनामिक अफेयर्स में और कुछ भले ही न कर सकूँ, आपके रहन के लिए एक आरामदेह बंगला तो पेश कर ही सकता हूँ ।''[19] प्रस्तुत उदाहरण के आधार पर लेखक शुक्लजी ने औपचारिक वातावरण की निर्मिति की है और विवेक की पिता के प्रति औपचारिकता को चित्रित किया है ।

उपन्यास में लेखक ने जयश्री के घर का वातावरण हू-ब-हू प्रस्तुत किया है – ''बँगला दुमंजिला था, छोटा और आकर्षक । नीचे चार और ऊपर दो कमरे थे । नीचे बैठक से मिले हुए कमरे में जमींदार साहब सोते थे । उनकी पत्नी, जयश्री की सास, ऊपर के कमरे में रहती थी । उसके पासवाला कमरा जयश्री का था जहाँ दिन में कई घंटे रिकार्ड बजा करते ।''[20]

जयश्री के घर में कुँवर साहब कुछ दिन रहे थे । जयश्री एक विवाहित नारी है और कुँवर साहब एक छात्र है जो बी. ए. में पढ़ते हैं । कुँवर साहब और सुंदरी में कुछ ज्यादा ही आकर्षण निर्माण होता है – दोनों भी मानो एक-दूसरें को देखे बिना पागल से हो जाते है । जयश्री कुछ ना कुछ बहाना बनाकर उनके सामने आने की चेष्टा करती है तो कुँवर साहब, आँखें भी बराबर जयश्री को ही खोजती है, अत: उनके प्रेम प्रसंग वातावरण, लेखक ने कुशलता से

चित्रित किया है – ''एक अजीब सा मानसिक तुफान झेलते हुए, उन्हे एहसास हुआ कि पहले की अपेक्षा नीचे की मंजिल में जयश्री का आना कुछ बढ़ गया है, यही नहीं, किसी नकली विषय पर वह जवाब में कुछ ऐसे वाक्य भी बोलने लगी है जो जरूरी नहीं हैं, जो अपने गैरजरूरीपन में एक आत्मीय रिस्ते की शुरूआत दिखा रहे हैं ।''[21] तथा ''जाडे की बरसाती शाम थी । सूरज डूबने के पहले ही नीचे के बरामदे में धुंधलका फैल गया था । कमरे का टेबल लैंप जलाकर उन्होंने कुछ पढ़ना चाहा पर आँख के आगे फैले हुए अक्षर तरलता के साथ धब्बों में बदल गए थे । उनके कान बरामदे में किसी अनुपस्थित आहट की टोह ले रहे थे । बरामदे के धुँधलके ने जैसे एक जीवंत सत्ता हासिल कर ली हो । उनकी ज्वरग्रस्त चेतना को यकिन था कि जयश्री जीना उतरकर अब बरामदे में आने ही वाली है ।''[22]

इस तरह लेखक ने दोनों के प्रेम संबंध का चित्रिण करके वातावरण निर्माण किया है ।

प्रस्तुत उपन्यास के वातावरण निर्माण के लिए लेखक को पर्याप्त श्रम उठाना पड़ा है क्योंकि लेखक का उद्‌देश्य उपन्यास में चित्रित 'बिस्रामपुर' का संपूर्ण चित्र तथा पात्रों की मानसिक स्थिति का वातावरण के रूपमें उपस्थित करना है ।

जयश्री अपनी कामपूर्ति कुँवर साहब द्‌वारा करना चाहती है इसलिए वह रात में उनके कमरे में चली जाती है । अत: लेखक ने जयश्री की मानसिक स्थिति का वातावरण और बाहर का वातावरण इनका समायोजन सूक्ष्मता से किया है । जैसे, ''याडे में दूर से आनेवाली किसी मालगाडी की 'खटर-खटर खट-खट' सुनायी दे रही थी और उस आवाज का आयतन धीरे धीरे बढ़ता जा रहा था । लगता था कि गाडी नजदीक आ रही है । जयश्री ने एकबार दरवाजे के पास खड़े होकर आहट ली, फिर उसने उन्हें जल्दबाजी में चूकर धीरे से बरामदे वाला

दरवाजा खोला, दोनों ओर सावधानी से दुखा और पाँवों की आवाज यार्ड से गुजरनेवाली गाडी की 'खटर खटर खट खट' में दबाकर एक छाया की तरह जीनें में अलक्षित हो गई ।''[23]

कुँवर जयंतीप्रसाद सिंह बिस्रामपुर जाकर समाज कार्य करना चाहते हैं इस बात से विवेक को अपने पिता की नाटकीयता पर हँसी आती है । कुँवर साहब बिस्रामपुर जाने से पहले ही वहाँ पहले अपनी व्यवस्था का इंतजाम करते हैं और पश्चिमी कमोड का होना भी आवश्यक मानते हैं । यह सुनकर तो विवेक और भी आश्चर्य में पड़ जाता है, अत: उसकी मानसिक स्थिति का चित्रण लेखक ने निम्ननुसार किया है – ''पिता को समझाने के लिए विवेक ने मन ही मन जो बहस तैयार की थी, इस क्यों ने उसे निरर्थक बना दिया । उसके टुकडे-टुकडे करके उसने उन्हें किसी अदृश्य कमोड़ में फेंक दिया, वैसी ही एक अदृश्य जंजीर खींचकर उन्हें फ्लश हो जाने दिया ।''[24]

लेखक शुक्लजी ने भूदान आंदोलन की पृष्ठभूमि के आधार पर, घटनाओं और परिस्थितियों के चित्रण द्वारा उपन्यास की निर्मिति की है ।

लेखक ने बिस्रामपुर का संत में वातावरण के चित्रण में स्थानीयता को अवशेष नहीं होने दिया है । बिस्रारामपुर के वातावरण का यथार्थवादी चित्रण किया है । उस गाँव का वातावरण ग्रामीण होने के कारण वास्तववादी चित्रण किया है । अत: बिस्रामपुर में ही कुँवर जयंतीप्रसाद सिंह के माध्यम से राजनीतिक नेताओं के ढोंगी वृत्ति को चित्रित किया है । कुँवर साहब बिस्रामपुर जाकर जनसेवा करना चाहते हैं लेकिन वहाँ का वातावरण उनके गले नहीं उतरता । अत: वे दिल्ली भाग जाना चाहते हैं । इस प्रसंग का वातावरण या चित्रण कितनी सुंदरता से किया है देखिए – ''कार में तुरंत बैठकर दिल्ली भाज चला जाए । पर कारण क्या बतायें ? उसे खोजने की जरूरत नहीं, पहले भी कई लोग उसकी आजमाइश कर चुके हैं । सीने का दर्द ! यहाँ से भागो और सीधे औल इंडिया इन्स्टीटयूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में भर्ती हो

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR
SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY ★ KOLHAPUR ★

जाओ-जिसके फाटक तुम्हारे लिए हमेशा खुले रहते हैं ।"[25] यह वातावरण बनाकर लेखक ने राजनीतिक लोगों की ढोंगी तथा नाटकीय वृत्ति को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है ।

बिस्रामपुर का संत उपन्यास में लेखक शुक्लजी ने पारिवारिक वातावरण के अंतर्गत सुशीला और निर्मल के परिवार का तनावपूर्ण वातावरण प्रस्तुत किया है । सुशीला निर्मल के गुणों पर फिदा होकर उनसे शादी करती है लेकिन बादमें वह पछताती है और उनका दांपत्य जीवन तनावपूर्ण वातावरण से गुजरता है – "शायद वे शादी के पहले ही भीतर से बदल चुके थे । तब उनके लिए मैं एक सम्मोहन के दौर में गुजर रही थी और इसे पहचान नहीं पायी थी । शादी के बाद उनके साथ रहते रहते हुए मुझे महसूस हुआ, उन्हें विदेश भ्रमण का चस्का पड़ चुका है और शायद उन चीजों का भी जिनके लिए लोग विदेश जाने के लिए लालचित रहते हैं ।"[26] इस तरह सुशीला और निर्मल में तनावपूर्ण वातावरण निर्माण होता है जिसका परिणाम यह होता है कि दोनों अलग-अलग हो जाते हैं । इन दोनों के परिवार में वैचारिक तनावों का वातावरण उभार दिया गया है ।

श्रीलाल शुक्लजी ने पात्रों के मुख से केवल संवाद ही नहीं कहलवाए हैं अपितु उनके कथन का दूसरे पात्र पर क्या प्रभाव होता है और कथन से पूर्व स्वयं दूसरे के कथनका उस पर क्या प्रभाव होता है, क्या प्रतिक्रिया होती है इसका सुंदर निदर्शन किया है । इससे पात्रों की गूढ़तम अंतरिक स्थिति का सम्यक परिचय मिल जाता है । अत: पात्रों के अंतर्द्वंद्व का वातावरण विशेष रूप से संवादो के माध्यम से ही हुआ है । सुशीला को कुँवर साहब का रहन-सहन, व्यवहार नाटकीय लगता है अत: वह हमेशा उन्हें टोककर ही बात करती है । जैसे,

सुशीला : "आप अभी यहाँ कितने दिन रूकेंगे ।"[27] इस सवाल में कुँवर साहब को भी बदतमीजी की खनक सुनायी दी ।

कुँवर साहब : तुम्हें शायद पता नहीं है । मैं वापस जाने के लिए यहाँ नहीं आया हूँ । यह आश्रम ही मेरा घर है ।''[28]

इस तरह प्रस्तुत संवादों के द्वारा उनके हाव-भाव और अंतर्द्वंद्व का चित्रण द्वारा वातावरण निर्मिर्ति हुओ है ।

अत: विवेक और कुँवर जयंतीप्रसाद सिंह इनके संवादों द्वारा भी अंतर्द्वंद्व का निदर्शन होता है । कुँवर साहब बिस्रामपुर जा रहे हैं, अत: विवेक से कहते हैं, ''जितने दिन इस जिंदगी के बचे है । कितने दिन बचे होगे ? दो साल ? साल भर ? छह महीने ? तीन महीने ? कुछ हप्ते ?''[29] इसपर विवेक की प्रतिक्रिया – ''मेरे सोचने का कोई अर्थ तब होगा बाबूजी, जब मुझे भरोसा हो कि आप उस पर खुले मन से विचार करेंगे । पर आपने अगर बिस्रामपुर जाने का फैसला कर ही लिया है तो उसके बाद मेरे सोचने या कहने को बचा ही क्या है ?''[30]

इस तरह लेखक ने संवादों के माध्यम से वातावरण निर्मिति करके पात्रों के चरित्र को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है ।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने दुबे महाराज और निर्मल भाई के माध्यम से भ्रष्टाचार के वातावरण को चित्रित किया है । दुबे के भ्रष्टाचार तथा गुंडागर्दी के उदाहरण देखिए ''सरकारी कानून है कि किसान की जमीन का रेहन कब्जे के साथ नहीं हो सकता । पर यहाँ सरकार का कानून नहीं, दुबे महाराज का कानून चला है ।''[31] निर्मल भाई भी भ्रष्टाचारी है – ''ज्यादा कहने से क्या फायदा । इस समय दिल्ली की तिहाड़ जेल में हैं ।''[32] इस तरह से लेखक ने भ्रष्टाचार तथा गुंडागर्दी के वातावरण का चित्रण किया हुआ दिखाई देता है ।

भूदान आंदोलन में सहयोग देनेवाले निर्मल भाई भ्रष्टाचारी बनते हैं इस वातावरण को लेखक ने बड़ी कुशलता से चित्रित किया है । अत: वातावरण के बारें में डॉ. मधु जैन के

विचार उल्लेखनीय है "अनुकूल परिस्थितियाँ जहाँ व्यक्ति को उन्नति के शिखर पर पहुँचा सकती है वहाँ प्रतिकूल वातावरण उसे पतन के गर्त में धकेल सकता है ।"[33]

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास का वातावरण भारतीय है । शुक्लजी ने भारत देश के वर्तमान युग का सही चित्रण इस उपन्यास में किया है । अत: वातावरण को दूषित होने नहीं दिया हे ।

आम भारतीय समाज का विषमता के कारण विकास नहीं हो पाया है । एक ओर गरीब तो दूसरी ओर अमीर, अत: अमीर-अमीर ही बनता जा रहा है और गरीब गरीब ही बनता जा रहा है । एक ओर शोषक तो दूसरी ओर शोषित ऐसा विषम विभाजन होने के कारण भारतीय समाज उन्नति की कगार से कहीं दूर है । शोषितों पर हमेशा अन्याय-अत्याचार ही होता रहा है । प्रस्तुत उपन्यास में दुबे महाराज जैसे जमींदार रामलोटन जैसे अनेक किसानों पर अन्याय-अत्याचार करते हैं, छोटे किसानों का मजदूरों का मानो खून ही चूसते हैं । किसानों की जमीन हडप लेते हैं इसका वातावरण लेखक ने इतनी गहराई से चित्रित किया है कि पढ़कर पाठकों के सामने हू-ब-हू दृश्य खडा रह जाता है । "कर्जे की लंबी एकमें सुनाकर कहा कि फार्म के कर्जे की देनदारी उनकी निजी जिम्मेदारी है जिसे मजदूरी में कटौती से ही पूरा नहीं किया जा सकता । अगर वे कर्ज की वसूली में जेल से बचना चाहते हो तो उन्हें अपनी फार्म से बाहर वाली जोत बेचनी या रेहन करनी होगी ।"[34] इस तरह दुबे महाराज किसानों पर, मजदूरोंपर रोब मचाता है और रेहन के नाम पर किसानों का अँगूठा लगवाकर जमीन पर कब्जा करता है । इस वातावरण को लेखक ने प्रस्तुत करके शोषक और शोषित वगै को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है ।

रामलोटन की हालत का वातावरण लेखक ने इतनी सहजता से किया है पर वह पढ़कर पाठकों का ऱ्हदय हिल उठता है । न होते हुए भी मजबूरी के कारण हट्टे-कट्टे रामलोटन

को रिक्षा चलाना पड़ता है । अत: इस वातावरण की निर्मिति लेखक ने कुँवर साहब के द्वारा प्रकट की है – ''रिक्षाचालकों की समस्या उनके लिए एक सामाजिक या आर्थिक समस्या नहीं, मूलत: एक सौंदर्य मूलक समस्या रही थी वैसे ही जैसे लूलों, लँगडों, कोठियों या फटेहाल भिखारियों की समस्या, उन्हें देखकर हममें से बहुतों के मन में सामाजिक विषमता और लचर व्यवस्था के खिलाफ आक्रोश नहीं पैदा होता, उन्हें देखते ही सबसे पहल हमारे सौंदर्य बोध को चोट लगती है ।''[35]

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में लेखक शुक्लजी ने राजनीतिक वातावरण कैसा गंदला गया है, लोग कैसे पाखंडी बन गए है इस वातावरण को प्रस्तुत किया है ।

देश की स्थिति दयनीय बनी हैं । राजनीति और नेता पूर्णत: बदल गए हैं, अत: उनमें सच्चाई, ईमानदारी, त्याग की भावना, सेवाभावी वृत्ति नहीं दिखायी देती । नेता सिर्फ अपने ही स्वार्थ के पीछे पड़े हैं, देश और सामान्य लोगों की उन्हें पर्वा नहीं रही है और इसी कारण सामान्य लोगों का राजनीति पर विश्वास ही नहीं रहा है । खुले आम सरकारी अफसर, ठेकेदार, पाखंडी, ज़मींदार जनता का शोषण करते हैं पर आम जनता मात्र सिर्फ आक्रोश करना जानती है । इस बारे में कुँवर साहब और सुशीला के बीच जो वार्तालाप होता है उसका वातावरण देखिए – ''पद्धतियों को बदलने की बातें वे दिल्ली में करते रहें । उससे हमारा कोई झगड़ा नहीं है । हमारा लढा स्पष्ट है । हम अपने स्तर पर आदमी को बदलकर उसकी प्रवृत्तियों को इतना उर्ध्वमुखी बनाने की सोचते हैं कि सरकारी पद्धतियाँ जैसी भी हों, अपने और समाज के लिए वह एक सुखद और वांछनीय वातावरण बना सकें । यह आदमी की सत्प्रवृत्ति में आस्था का सवाल है ।''[36]

अत: शुक्लजी ने देश की वर्तमान स्थिति का यथार्थवादी चित्रण सुशीला के माध्यम से किया है, अत: उस वातावरण का सही चित्रण सुशीला के मुख से इस प्रकार हुआ है –

"देश में चारों ओर आज क्या हो रहा है ? कुछ लोग पिछले पैंतीस साल से सारी व्यवस्था को क्रांति से, हिंसा से, आतंकवाद से बदलने की कोशिश कर रहे हैं । पर उसका नतीजा क्या है ? हिंसा ने सिर्फ हिंसा को बढ़ाया है मूल व्यवस्था ज्यों-की-त्यों है । उधर सरकार के पास हर सामाजिक विकृति का सिर्फ एक इलाज है कानून । जहाँ भी कोई विकृति दिखायी दे, एक नया कानून लागू करके नागरिक के पाँवो में एक और बेड़ी डाल दे । वे यह भूल जाते हैं कि आदमी की कुप्रवृत्ति को अगर सुधारने की कोशिश न की गयी तो उसकी एक चाल सारे कानुनी बदलावों को मात दे देगी ।"[37] इस कथन में वर्तमान भारतीय समाज की भ्रष्ट नीति का वास्तववादी चित्रण है । जो वातावरण के रूपमें उभर उठा है ।

शुक्ल जी ने गाँव के वातावरण को हू-ब-हू प्रस्तुत किया है – "कहीं कहीं खेतों की मेंड़ें थी, कहीं छिछले गड्डे थे ।"[38] तथा "झोपड़ियों के आगे एक अपेजाकृत समतल मैदान था । वहाँ एक साठ पैसंठ साल का आदमी दस – बारह साल के दो बच्चों के साथ गुल्ली डंडा खेल रहा था ।" इससे देहात का यथार्थ वातावरण प्रस्तुत होता है ।

परिवर्तन सृष्टि का नियम है, समाज में जैसें-जैसे परिवर्तन होते हैं, उसी तरह के परिवर्तन मनुष्य में भी होते हैं । यह परिवर्तन कभी मंद गति से तो कभी शीघ्र गति से होते हैं । अत: जीवन में कभी तनाव, संकटों का सामना करना पड़ता है तब मनुष्य के स्वभाव में शीघ्र परिवर्तन या बदलाव निर्माण होता है ।

सुंदरी का पत्र पढ़कर कुँवर साहब बेचैन हो गए अत: उनके सामने आत्महत्या के सिवाय कुछ नहीं बचा था, वे आत्महत्या करने के लिए बेतवा नहीं का सहारा लेते हैं । अत: आत्महत्या के समय उनकी जो मानसिकता थी उसे वातावरण के रूपमें उभारने का प्रशंसनीय काम लेखक ने किया है । जैसे, कुँवर साहब नदी की ओर चलने लगे, "मन में कोई आवेग नहीं था, पर अजीब सा खालीपन था । जैसी किसी परिचित शवयात्रा से वे अकेले लौट रहे हों ।

उन्हें ऐसा नहीं लग रहा था कि कुछ उनके साथ हो रहा है, यही जान पड़ता था कि कुछ किसी दूसरे के साथ होने जा रहा है और वे उसे सिर्फ देख रहे हैं ।"[39]

इस तरह उपर्युक्त विवरण से लेखक ने कुँवर साहब की आत्महत्या के समय की मानसिक स्थिति का वातावरण प्रस्तुत किया है ।

लेखक ने नदी के किनारे का वातावरण कितनी सुंदरता से प्रस्तुत किया है देखिए – "खेतों से आगे, और कहीं कहीं उनके बीच में छिटपुट पेड़ थे । एक महुए के पेड़ों का झुरमुढ तैयार हो गया था । वहाँ मल्लाहों की कुछ झोंपड़ियाँ थी ।"[40]

अत: लेखक ने मल्लाहों के झोपड़ियों का वर्णन निम्न नुसार किया है – "नदी के किनारेवाली झाडियों में एक मड़ैया बनी हुई थी । चाल लकड़ियाँ गाडकर उनके ऊपर एक बहुत हलका छप्पर दिया गया था ।"[41]

इस प्रकार लेखक ने बेतवा नदी के किनारे पर स्थित वातावरण को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है ।

शुक्ल जी ने कुँवर साहब की मानसिक स्थिति का या उनकी कुंठा का चित्रण प्रकृति से समायोजन करके वातावरण की निर्मिति कितनी मार्मिकता से की है देखिए – "ऊपर खूब नीला आसमान है, उनके आगे – पीछे नदी है । उस पार आश्रम की इमारत का सफेद कोना ऊँचे ऊँचे पेड़ों की मस्त हरियाली के बीच में सलक रहा है । सारी अवसन्नता को झटककर एक बार वे फिर नये सिरे से वह सब सोचना चाहते हैं जो पिछले दिनों से बराबर सोचते रहे हैं, पर इतना ही सोच पा रहे हैं : मेरा पायजामा इतना गीला क्यों है ?"[42]

प्रस्तुत उपन्यास में दुबे महाराज एक भ्रष्टाचारी तथा गुंडागर्दी पात्र के रूप में चित्रित हैं लेकिन वही पात्र प्रसंग आने पर किस तरह गंभीर नजर आते हैं, अत: दुबे दूवारा लेखक ने गंभीर वातावरण को निम्ननुसार प्रस्तुत किया है । जैसे, "ज्यादा पी जाने का नतीजा है

देखो, पीता मैं भी हूँ, पर होश नहीं खोता ।"[43] इसके साथ ही गंभीर वातावरण का और एक नमूना कुँवर साहब दूवारा विवेक को लिखे पत्र में मिलता है – "कैसी विडंबना है कि अपने जीवन के अनेक गोपनीय प्रसंगो में तुम्हें शामिल करना कभी जरूरी नहीं समझा, पर मृत्यु के इस गोपनीय प्रसंग में अकेले तुम्हें शामिल कर रहा हूँ ।"[44]

इस तरह लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में गंभीर वातावरण की निर्मिती की है ।

लेखक ने सरकारी कार्यालयों में किसतरह का वातावरण होता है उसी पर भी नजर डाली है – "मन में कुछ यादें धूप छाँव की लहरों जैसी आती है, मिट जाती है । पर वे क्षुद्र यादे हैं और उनका जिंदगी की गहराई से कोई सरोकार नहीं है ।"[45] इसी तरह लेखक ने दफ्तरी वातावरण का चित्रण प्रस्तुत किया है ।

समन्वित निष्कर्ष -

'बिस्रामपुर का संत' में उपन्यासकार ने विविध घटनाओं को लेकर बड़ी कुशलतापूर्वक वातावरण की निर्मिती की है । 'बिस्रामपुर' गाँव को केंद्र में रखकर वर्तमानकालीन विविध सामाजिक समस्याओं को प्रस्तुत किया है । अत: उपन्यास में अनेक स्तरों के पात्रों को लेकर उन्हीं के अनुसार वातावरण की निर्मिती करके विविध समस्याओं को चित्रित किया है । शुक्ल जी समस्याओं का चित्रण करते समय वातावरण को दुर्लक्षित नहीं किया है । वातावरण की निर्मिति पात्रों के अनुसार करके देश और युग के चित्रण दूवारा वर्तमानकालीन सामाजिक विषमताओंपर, समस्याओंपर करारा व्यंग्य किया है ।

उपन्यास में लेखक ने राजनीतिक नेताओं के महल का, उनकी शान–शौकत, ऐशो–आरामी जिंदगी का वातावरण सूक्ष्मता से चित्रित किया है और उनकी पोल खोलने का प्रयास किया है, अत: लेखक उसमें सफल भी हुए हैं ।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

भ्रष्टाचार का, गुंडागर्दी का शोषण का वातावरण प्रस्तुत करके इन समस्याओं को पाठकों के सामने रखकर यथार्थ चित्रण चित्रित किया है ।

उपन्यास में कुँवर साहब की मानसिक कुंठा का, आत्मछल का, अपराध बोध का तथा द्विधामानसिक स्थिति का वाताव्नरण लेखक ने सूक्ष्मता से चित्रित किया है ।

इस प्रकार लेखक ने वातावरण के अंतर्गत वर्णनात्मक सूक्ष्मता के साथ विश्वसनीयता लायी है और बाहरी वातावरण और मानसिक वातावरण का ध्यान रखते हुए वातावरण की सृष्टि की है ।

अत: शुक्लजी ने समाज की विडंबना पर व्यंग्य करते हुए यह सिद्ध किया है कि व्यक्ति के विकास एवं निर्माण में उसके चारों ओर का वातावरण महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है । अनुकूल परिस्थितियाँ जहाँ व्यक्ति को उन्नति के शिखर पर पहुँचाती है तो वहाँ प्रतिकूल वातावरण उसे पतन के गर्त में धकेल सकता है ।

कुँवर जयंतीप्रसाद सिंह, निर्मल, सुंदरी, विवेक के चारित्रिक विकास के द्वारा लेखक ने वातावरण की इस महत्ता की व्यंजना की है । अत: पर्यावरण व्यक्ति का ही नहीं राष्ट्र का भी भाग्य– निर्माता होता है ।

इसी तरह आर्थिक स्थितियाँ भी व्यक्ति के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है ।

इस प्रकार शुक्ल जी ने वातावरण का निर्वाह करने की कोशिश की है ।

संदर्भ-सूची

अ.नं.	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	पृष्ठ क्रमांक
1.	श्रीलाल शुक्ल,	'बिस्रामपुर का संत'	पृ. 09
2.	वही,	वही,	पृ. 08
3.	वही,	वही,	पृ. 10
4.	वही,	वही,	पृ. 10
5.	वही,	वही,	पृ. 10
6.	वही,	वही,	पृ. 24
7.	वही,	वही,	पृ. 26
8.	वही,	वही,	पृ. 26
9.	वही,	वही,	पृ. 26
10.	वही,	वही,	पृ. 26
11.	वही,	वही,	पृ. 36
12.	वही,	वही,	पृ. 33
13.	वही,	वही,	पृ. 33
14.	वही,	वही,	पृ. 36
15.	वही,	वही,	पृ. 41
16.	वही,	वही,	पृ. 46
17.	वही,	वही,	पृ. 49
18.	वही,	वही,	पृ. 49
19.	वही,	वही,	पृ. 49
20.	वही,	वही,	पृ. 53
21.	वही,	वही,	पृ. 54
22.	वही,	वही,	पृ. 56

अ.नं.	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	पृष्ठ क्रमांक
23.	श्रीलाल शुक्ल,	बिस्रामपुर का संत	पृ. 59
24.	वही,	वही,	पृ. 81
25.	वही,	वही,	पृ. 83
26.	वही,	वही,	पृ. 160
27.	वही,	वही,	पृ. 156
28.	वही,	वही,	पृ. 156
29.	वही,	वही,	पृ. 78
30.	वही,	वही,	पृ. 80
31.	वही,	वही,	पृ. 124
32.	वही,	वही,	पृ. 160
33.	डॉ. मधु जैन,	यशपाल के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण	पृ. 122
34.	श्रीलाल शुक्ल,	बिस्रामपुर का संत	पृ. 124
35.	वही,	वही,	पृ. 113
36.	वही,	वही,	पृ. 164
37.	वही,	वही,	पृ. 96
38.	वही,	वही,	पृ. 96
39.	वही,	वही,	पृ. 193
40.	वही,	वही,	पृ. 193
41.	वही,	वही,	पृ. 195
42.	वही,	वही,	पृ. 194
43.	वही,	वही,	पृ. 198
44.	वही,	वही,	पृ. 201
45.	वही,	वही,	पृ. 37